International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI)
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 8 Issue 1 Ser. I || January 2019 || PP 98-99

स्त्री अध्ययनः संभावनाएं एवं चुनौतियाँ

सुषीला सांवरिया
सह आचार्य (इतिहास)
स्व. पण्डित नवल किशोर षर्मा राजकीय
स्नातकोत्तर महाविद्यालय दौसा (राज.)

सन्दर्भ
संक्षेप में मीडिया के सभी संस्करणों ने जहां लिंग आधारित समस्याओं को कुछ हद तक सबके सामने रखा है। साक्षात्कार के जरिये महिला आदर्शों को घर तक पहुंचाने का सफल प्रयास किया है। न केवल महिलाओं बल्कि पुरुषों को भी महिला उत्थान के प्रति जागरूक किया है। स्त्री सिर्फ चार दीवारी के भीतर ही रहती है। रूढ़िवादी समाज की यह मानसिकता टूटने में वक्त लगेगा। मीडिया को इसमें अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभानी होगी। अपनी प्रस्तुतियों द्वारा उसे न केवल नीति नियन्ताओं बल्कि समाज पर सकारात्मक दबाव बनाना होगा। महिला सशक्तिकरण में के उसे अपनी भूमिका युद्ध स्तर पर बढ़ानी होगी। मीडिया बड़ी आसानी से लैंगिक समानता व महिला सशक्तिकरण के प्रति महिला एवं पुरुषों दोनों का नजरिया सकारात्मक रूप से बदल सकती है। मीडिया सशक्त व सफल महिलाओं एवं बच्चियों के लिए प्रेरणा का कार्य कर सकती है।

परिचय

महिला सशक्तीकरण के औचित्य का प्रश्न है, इस सम्बन्ध में कदाचित् सभी सहमत होंगे कि किसी भी समाज अथवा राष्ट्र में योग्यता का एक निश्चित भण्डार (National Pool of Ability) होता है जिसकी संरचना उसके नागरिकों के शारीरिक, मानसिक, नैतिक व चारित्रिक गुणों से होती है। शिक्षा व्यक्ति में इन गुणों का परिष्कार और विकास करती है। अतः उसकी भूमिका भी इस संरचना में कमतर नहीं आँकी जा सकती है। जाहिर है कि स्त्रियाँ, जो हमारे देश की आधी जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनकी उन्नति और विकास के बिना हमारी राष्ट्रीय और सामाजिक क्षमता भी आधी–अधूरी ही रहेगी। इस पृष्ठभूमि के सापेक्ष यदि हम अपने देश में महिला आंदोलनों अथवा नारी सशक्तीकरण के इतिहास पर एक दृष्टि डाले तो कतिपय बिन्दु उभरकर सामने आते हैं–

19 वीं सदी में महिलाओं की भलाई–बुराई के मुद्दे प्रमुखता से उभरे तथा जिसको सुधारने का प्रारम्भिक प्रयास पुरुषों द्वारा ही किया गया। 20 वीं सदी के आरम्भ में महिलाओं के स्वायत्त संगठन बनने शुरु हुए जिससे नारी सक्रियता की एक विशेष श्रेणी का निर्माण हुआ। इस सदी के उत्तर्रार्द्ध तक, महिलाओं को अपने जीवन के बारे में स्वयं निर्णय लेने के अधिकारों की माँग उठाई गई। आज भारतीय समाज में नारी की स्थिति बेहद सशक्त हुई है।

मीडिया ने स्त्रियों को अहम् पद प्रदान कर उन्हें सशक्त बनाया है तथा वहीं उनकी प्रेरक कहानियों से उनमें आत्मविश्वास भी उत्पन्न किया है। मीडिया और अन्य माध्यमों के कारण आज महिलाओं पर होने वाले अत्याचार और अपराध हमारे समक्ष प्रस्तुत हो रहे हैं, जिससे उन्हें न्याय मिल रहा है। आज नारियाँ प्रत्येक क्षेत्र के विभिन्न पदों पर स्थापित हैं। मलाला युसुफ को कौन जानता, जिसे नोबेल का शान्ति पुरस्कार मिला, यदि उसे मीडिया ने नहीं दिखाया होता। आज तकनीकी एवं शैक्षिक विकास ने नारी की सोंच में क्रान्तिकारी परिवर्तन किया है–यही नारी सशक्तीकरण है, जिसमें मीडिया और अन्य माध्यमों की अहम् एवं सशक्त भूमिका है।

मीडिया! यह नाम सुनते ही जेहन में जो भाव उभर कर आता है वह है एक रंगीन दुनिया, सूचनाओं का अथाह समन्दर और उसके आस–पास घूमते तमाम लोग। मीडिया का जो रूप आज हमारे सामने है वह कुछ अरसे पहले तक इससे एकदम अलग था। बंगाल गजट से लेकर 1990 के दशक तक मीडिया जो अब कुछ पन्नों से निकलकर रेडियो फिर टेलीविजन पर आ गई थी, जिसका एक मात्र उद्देश्य घटनाओं की वास्तविकता को प्रस्तुत करना एवं समाज में व्याप्त दुष्प्रवृत्तियों के विरूद्ध लोगों को जागरूक करना था। 1991 में जब उदारीकरण का दौर आया तो मीडिया भी प्रतिस्पर्धा में शामिल हुई और सत्य इस दौड़ में पीछे छूटता चला गया।

समाज व देश दुनिया के ऐसे मुद्दे हैं जिसे मीडिया सबके सामने जाकर लोगों को इनसे अवगत कराती है। इन्हीं महत्वपूर्ण मुद्दों में से एक है महिला सशक्तिकरण। भारतीय पुनर्जागरण के पिता कहलाने वाले राजा राम मोहनराय की पत्रिका संवाद कौमुदी ने सर्वप्रथम सती प्रथा निर्मूलन एवं ईश्वर चन्द्र विद्यासागर की सोम प्रकाश ने सर्वप्रथम स्त्री शिक्षा एवं विधवा पुनर्विवाह के लिए आवाज बुलन्द की। 1920 के दशक में जब रेडियो पहली बार चौखट के भीतर गया तब उसने सबसे ज्यादा भला घरों में रहने वाली महिलाओं का किया। ऐसा नहीं था कि मीडिया रेडियो के प्रचलन से पहले नकारा थी किन्तु उस समय महिला साक्षरता दर 2 फीसदी से भी कम होने के कारण कागजों में छपे अक्षर उनके लिए किसी महत्व के नहीं थे। रेडियो के प्रचलन से महिला सशक्तिकरण का यद्यपि धुंधला किन्तु पहला दौर शुरू हुआ। यह जग जाहिर है कि आजादी के संघर्ष में महिलाओं की भागीदारी 1920 के बाद ही बढ़ी। महात्मा गांधी को इसका निर्विवादित श्रेय प्राप्त है किन्तु उनके स्लोगनों को चौखट के अन्दर लाने का श्रेय रेडियो को ही जाता है।

रेडियो के बाद सिनेमा और फिर टेलीविजन ने महिला सशक्तिकरण के विचार को और भी हवा देने का कार्य किया। मीडिया अब जबकि जीवन का एक अभिन्न अंग बन चुका है। टेलीविजन, रेडियो, किताब, पत्रिकाओं और समाचार पत्रों के माध्यम से आम जनता की पहुंच में है। यह सम–सामयिक मुद्दों से लोगों को अवगत कराकर जनमत और प्रभावित करता है। अपने इसी व्यापकता के चलते वह समाज और नीति नियन्ताओं पर दबाव भी बनाता है। मीडिया समाज का दर्पण होता है और यह समाज में घट रही घटनाओं का संकलन समाज के सामने प्रस्तुत करता है। आईटी क्रान्ति ने मीडिया के प्रभाव को और भी बढ़ा दिया है। मीडिया तमाम सकारात्मक भूमिका निभाये जाने के बावजूद लिंग आधारित भेदभाव को तथ्यात्मक रूप से प्रस्तुत करने में असफल रहा है। इण्टरनेट ने हजारों मील दूर वास्तव में क्या घटित हुआ है या हो रहा है। ये लोगों को पलभर में ज्ञात हो सकता है।

संक्षेप में मीडिया के सभी संस्करणों ने जहां लिंग आधारित समस्याओं को कुछ हद तक सबके सामने रखा है। साक्षात्कार के जरिये महिला आदर्शों को घर तक पहुंचाने का सफल प्रयास किया है। न केवल महिलाओं बल्कि पुरुषों को भी महिला उत्थान के प्रति जागरूक किया है। स्त्री सिर्फ चार दीवारी के भीतर ही रहती है। रूढ़िवादी समाज की यह मानसिकता टूटने में वक्त लगेगा। मीडिया को इसमें अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभानी होगी। अपनी प्रस्तुतियों द्वारा उसे न केवल नीति नियन्ताओं बल्कि समाज पर सकारात्मक दबाव बनाना होगा। महिला सशक्तिकरण में के उसे अपनी भूमिका युद्ध स्तर पर बढ़ानी होगी। मीडिया बड़ी आसानी से लैंगिक समानता व महिला सशक्तिकरण के प्रति महिला एवं पुरुषों दोनों का नजरिया सकारात्मक रूप से बदल सकती है। मीडिया सशक्त व सफल महिलाओं एवं बच्चियों के लिए प्रेरणा का कार्य कर सकती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची–

1. – नया शिक्षक, नैतिक शिक्षा विशेषांक, माध्यमिक शिक्षा निदेशालय, बीकानेर, राजस्थान, जुलाई–सितम्बर, 2013
2. – शिक्षा चिन्तन, शैक्षिक त्रैमासिक शोध पत्रिक, त्रिमूर्ति संस्थान सेक्टर–63, नोएडा, अप्रैल–जून, 2013
3. – भारतीय आधुनिक शिक्षा एन0 सी0 ई0 आर0 टी0, नई दिल्ली, ;संयुक्तांकद्ध, 2007
4. – शिक्षा चिन्तन, शैक्षिक त्रैमासिक शोध पत्रिक, त्रिमूर्ति संस्थान सेक्टर–63, नोएडा, अक्टूबर–दिसम्बर, 2014